International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.7 No.3 Jan –Feb 2020

कहानियों में कामकाजी महिलाएँ और उनकी समस्याएँ

डॉ. शैलजा धोंडीराम गवळी

महाबळेश्वर

सारांश:

आज नारी पुरानी रुढ़ि तथा परम्परा के दायरे से बाहर निकल स्वतंत्र रुप से अधिकारों के प्रति सजग हो रही है। वह आर्थिक निर्भरता के साथ स्वतंत्र रूप से जीवन जी रही है। जीवन के हर क्षेत्र में उसने अपना अस्तित्व निर्माण किया है। समाज, धर्म, अर्थ, राजनीति, विज्ञान, तंत्रज्ञान, नौकरी हर क्षेत्र में वह आज कार्य कर रही है। शिक्षा के बल पर आज की नारी चारदीवारों की कैद से स्वतंत्र हो चुकी है। शोषण के तरीके से कुछ राहत पा चुकी है। महानगरों में भले ही परिवर्तन दिखाई दे। देहात में रहनेवाली, आदिवासी नारियों की स्थितियों में अधिक अंतर नहीं आया है। शासन एवम् कानून से नारी को खोया हुआ आत्म सम्मान वापस मिला है, फिर भी उनकी सामाजिक स्थिति संतोषकारक नहीं है। आज उनके कामकाजी बनने का और उसका विरोध न करने का कारण यह है कि मध्यवर्ग के परिवार के रहन-सहन का स्तर बनाये रखने के लिए उनकी कमाई अनिवार्य है।

प्रस्तावना:

कामकाजी नारी के विषय में डॉ.प्रमिला कपूर का कथन है कि - **"यह शब्द उन स्त्रियों के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो वेतनवाले कामधंधों में लगी है, उनके लिए नहीं जो समाज सेवा में रत है, या फिर अवैतनिक रुप से काम कर रही है।"**[१]

डॉ.धनराज मानधाने के शब्दो में - **"यदि कोई पति यह मानता रहा कि नौकरी के बावजूद घर का सारा बोझ पत्नी उठाए तब तो तनाव पैदा होगा। आज पत्नी को पत्नी, माँ और कामकाजी नारी को तिहरी भूमिका निभानी पड़ती है। इसीलिए उसके आचरण में जटिलता आ जाती है। उसे समझे बिना यदि पति उस पर अपनी रुचि को थोपने लगता है, उनका अनादर करने लगता है, तब संघर्ष आरंभ होता है।"**[२]

आधुनिक युग में नारी के घर की दहलीज लांधकर सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। अर्थ प्राप्ति के लिए व्यवसायिक जीवन में प्रवेश लिया। वहाँ उसे तरह-तरह की असुविधाओं का सामना करना पड़ा। एक ओर उसे अपनी शारीरिक प्रकृति परेशानियों से उलझना पडता है। दूसरी अपनी मालिकों से भी। मालिकों का रवैया हमेशा शोषण का रहता है। व्यवसायिक जगत में नौकरी करनेवाली स्त्रियों की ओर देखने का उनके मालिकों का तरीका बड़ा अजीब होता है। कई बार वे अपने मातहतों को भोग के लिए जिस्म या रखैल की तरह समझने लगते है। इससे स्त्री का व्यक्तित्व कुंठित होता है। इस प्रकार दफ्तर में और घर में स्त्री की तरह-तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। दफ्तर में काम करनेवाली महिलाओं को घर ठीकठाक से देखभाल करने की समस्याएँ और दफ्तर में सहयोगियों की समस्याएँ उत्पन्न होती है।

'हार' कहानी में मन्नू भण्डारी ने दफ्तर में सहयोगियों की समस्या का चित्रण किया है। इस कहानी में शेखर और दीपा दोनों पति-पत्नी हैं। दोनों को राजनीतिक दल में दिलचस्पी थी। दोनों अलग-अलग पार्टी के सदस्य है। दीपा ने अपने पार्टी की उन्नति के लिए सभी गहनें बेचकर चुनाव में खर्च कर देती है। तब दीपा सोचती है - **"चाहे कोई कितना ही उदार हो आखिर पुरुष ही है वह बस यहीं चाहते है कि नारी उसी का अनुसरण करें। कहने को ये बड़ी-बड़ी बातें करते हैं पर जब मौका आया तो सह नहीं सका।"**[३]

उषा प्रियंवदा की 'प्रसंग' कहानी में दफ्तर की समस्या है। इस कहानी की नायिका ममता जैन है। वह लखनऊ में डाक्टरी पढ़कर विदेश में काम करती है। विदेश में राघव जैसा प्रेमी था। सप्ताह भर जी तोड़कर काम करती और बुधवार की मध्यान्ह में राघव की प्रेमिका बन जाती थी। उन दोनों के बीच में जो समझौता हुआ था वह है कि - **"बरसों से बुधवार का मध्यान्ह वे दोनो बिताते आए थे। राघव अपना पारिवारिक और सामाजिक मुखौटा जैसे दरवाजे के उस पार ही छोड आता था और ममता का यही संसार यथार्थ था। (राधव की) उसकी उष्मा, उसके सान्निध्य को अंतिम बुंद की तरह निचोड़कर पीती हुई।"**[४]

यह संबंध एक प्रसंग की तरह प्रारंभ हुआ और हल्का-फुल्का रोमान्स गोपनीय रहें। नायिका ने राघव से वादा किया था कि वह कभी उसे पारिवारिक जीवन की सीमा से अतिक्रमण नहीं करेगी। अचानक राघव की मृत्यु होती है। इसके बारे में हास्पेटल में सभी उनको चिढ़ाते थे। इसलिए वहाँ एक ओर शोर, दूसरी ओर हास्पेटल में चिढ़ाने की चिंता दोनों उनको सताती थी। इसलिए हास्पेटल को छोड़कर वह भारत लौट आती है।

'शून्य' कहानी में चित्रा मुद्गलजी ने कामकाजी नारी के मातृत्व का वर्णन किया है। इस कहानी में सरला राकेश की पत्नी है। राकेश सरला से शादी नहीं करना चाहता था। किन्तु उनके घरवाले तो इस रिश्ते के लिए पीछे पड़े थे। शादि के तीन चार दिन बाद राकेश ने कहा वह विवाहित युवती बेला से प्यार करता है। बाद में राकेश सरला से दूर भागता है। उनका अपना कोई कसुर नही था। एक दिन उसने सरला को उतना मारा कि उसे चार-चार टाँके लगे। सरला टीपू को लेकर जाती है। उसने तीन शहर और तीन कालेज बदले - **"हर शहर हर नई नौकरी ने उसके आत्मबलहीन नहीं दिया सामर्थ्य बोध से भी पूरा है।"**[५] राकेश बेला से विवाह कर लेता है। सरला पहले दीपू को अपने पास रखना नहीं चाहती, बल्कि बाद में उसे मन में अपने बेटे के प्रति प्रेम और ममता की भावना उभरती है। सरला जिन्दगी में शून्य के साथ जीती है। इधर राकेश और बेला की जिन्दगी में एक बड़ी समस्या निर्माण होती है। एक दुर्घटना में बेला की स्थिति ऐसी होती है कि वह कभी भी माँ नहीं बन पायेगी। राकेश बेला सरला से दीपू को माँग करते हैं। सरला दीपू को देने से इन्कार करती है - **"दुनिया का कौन-सा कानून, कौनसी ताकत उससे उसका बच्चा छीनकर बेला की गोद भर सकती है। चाहे उसे सुप्रीम कोर्ट तक क्यों न लड़ना पडे।"**[६] उसके सामने आई हुई समस्या से सरला संघर्ष करती है। डॉ.चौधरी वेदवती नवम् दशक की कहानियों में कामकाजी नारी की भूमिका में सरला के बारे में कहती है - **"कामकाजी होने के नाते वह अपनी बालक दीपू को किसी भी किमत पर राकेश और बेला को नहीं देना चाहती। वह, सुप्रिम कोर्ट तक लड़ने के लिए तैयार है। यदि**

कामकाजी न होती तो समझौता कर लेती।"[७] चित्राजी ने इस कहानी में कामकाजी भारतीय नारी के मातृत्व की संस्कारशीलता को उजागर किया है।

'एक और विवाह' कहानी की नायिका कोमल है। उसने राजनीतिशास्त्र में पीएच.डी. किया है। वह दिल्ली कालेज में लेक्चरर है। आधुनिक सोचवाली है। आधुनिक सोच रहने के कारण छब्बीस साल तक वह कुमारी रह गयी। वह प्रेम विवाह को महत्व देती थी। मदन नामक लडके को देखकर मन ही मन सोचती है कि - **"मौसम को देखते हुए मच्छर अच्छा है।"**[८] कोमल की विवाह संबंधी मान्यताएँ और विचारों को देखकर कालेज में सभी लोग उसकी शादी के बारे में पूछते और सताते है। यही कोमल की समस्या है।

नौकरी करनेवाली नारी की समस्याएँ अलग-अलग होती है। नारी को पैसे कमाने का साधन मानते हैं। नौकरी करके परिवार को पैसा देने पर भी उसे वह सम्मान नहीं मिलता। उसे हमेशा नारी हने का एहसास दिलाया जाता है। उसे परिवार, पति, बच्चों, दफ्तर, राह चलते समय वहाँ के लोगों से हमेशा संघर्ष करना पड़ता है। दफतर में अपने बोस की बुरी नजरों से बचना पड़ता है, तो घर में पति के मन में शक की सुई चलती है। इन दो पात्रों में नौकरी करनेवाली नारी पिसती जाती है। इस प्रकार का चित्रण मेहरून्निसा परवेज की 'खाली आँखों की पीड़ा' कहानी में हुआ है।

'खाली आँखों की पीड़ा' की उमा नौकरी करती है। किन्तु पति को लगता है कि वह सारा धन अपने माँ-बाप को देती है। उमा के माता-पिता भी उमा की आस लगाये बैठे रहते हैं कि वह हमारी मदद करेगी। बल्कि उमा सबसे परेशान है - **"उसे लगता है कि मोह-माया उसे जीवन भर न आत्महत्या करने देगी, न कही भागने। उसे सब कुछ सहते हुए जीना होगा। इतना दुखों के बोझ में एक और सही।"**[९]

'विद्रोह' कहानी में नीना एक ओफिस में काम करती है। मीना के पैसों से ही घर को चलाना है। इसलिए माँ-बाप उसकी शादी करना नहीं चाहते। यह उसकी समस्या है।

'दहलीज' कहानी में तीन बहनें है, उसके नाम सकीना, हुमैरा और शाहीन है। तीनों बहनें जब स्कूल की शिक्षा समाप्त करती है, आगे पढ़ना और नौकरी करना चाहती है। किन्तु उनकी दादी उनकी शादी करना चाहती है। सकीना को और हुमैरा को शादी की है। शाहीन पढ़ लिखकर एक स्कूल में अध्यापिका का काम करती है। सकीना से ससुराल से बहुत दिनों के बाद पत्र आता है कि सकीना के ससुराल वाले उसकी पढ़ाई पर नाराज है। इधर शाहीन शादी की रात ही आत्महत्या करती है। दोनों बहने सोचती थी - **"शाहीन ने अकेले मरने का यह फैसला बगावत का यह अंदाज आजादी का यह चुनाव कब और कैसे किया ?"**[१०] शाहीन नौकरी पेश औरत थी। शादी की वजह से नौकरी छोड़ी। कामक रने की जगह पर सभी उसे सताते थे। तरह-तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन सभी समस्याओं से ऊबकर वह आत्महत्या कर लेती है।

इस समस्या के अतिरिक्त नौकरी पेशा नारी के जीवन में रोज ही कोई न कोई समस्या उत्पन्न होती है। शिक्षिका है तो उसके स्कूल अथवा कॉलेज की वहाँ के विद्यार्थियों की समस्या घेरे रहती है। डॉक्टर है तो उसे रात-दिन काम करना

पड़ता है। रात-बे-रात को कभी भी मरीज को देखने बुलावा आ सकता है। नारी समस्या को मुख्य रुप से इसलिए लिया जाता है कि हमारे समाज में नारी को एक विशेष दृष्टिकोण से देखा जाता है। पुरुष प्रारंभ से ही विभिन्न व्यवसायों को अपनाता आया हो पर नारी अभी बहुत से व्यवसायों में नई है। उनके अतिरिक्त नारी को पुरुष की अपेक्षा प्रत्येक व्यवसाय में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कुछ लोग विवशता की भली-भाँति लाभ उठाकर उसका शोषण करते हैं। वह अपनी आर्थिक दशा से विवश होकर कुछ नहीं कर पाती। उस प्रकार शारीरिक और मानसिक दोनों ही संघर्षो से गुजरना पड़ता है।

आज आम नारी केवल शहर महानगर से ही जुडी नहीं है। वह वैश्विक धरातल पर भी जुड़ी है। नारी आखिर नारी है। चाहे वह देहात की हो शहर, देश या विदेश की हो नारी होने के नाते उनकी अपनी कुछ निजी समस्याएँ है, जो कि एक समान है।

संदर्भ:

१. हिन्दी कहानी में नारी विमर्श, प्रा.बापूराव देसाई, पृ. ४५

२. साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी नारी, डॉ.धनराज मानधानें, संचेतना, दिसंबर-१९८३, पृ. २६

३. तीन निगाहों की एक तस्वीर, मन्नू भण्डारी, पृ. ९७

४. प्रसंग-शून्य तथा अन्य रचनाएँ, उषा प्रियंवदा, पृ. ३७

५. शून्य आदि अनादि भाग-१, चित्रा मुद्गल, पृ. २११

६. वही, पृ. २११

७. नवम दशक की कहानियों में कामकाजी नारी की भूमिका, डॉ.चौधरी वेदवती, पृ. २०४

८. एक और विवाह, मृदुला गर्ग, पृ. ६३

९. आदम और हव्वा, मेहरुन्निसा परवेज, पृ. १७०

१०. खुदा की वापसी, नासिरा शर्मा, पृ. ७६